प्राचीन भारतीय इतिहास में नारियों की स्थिति

बलिराम प्रसाद सिंह*

साक्ष्य पुरातात्विक हो या साहित्यिक इसके आधार नारियों की निष्पक्ष एवं सार्थक मूल्यांकन करने की जरूरत है। जब से सृष्टि का सृजन हुआ, तब से जितनी भूमिका पुरुष की रही है उतनी ही नारी की रही। जब से मानव की कहानी है प्रत्येक क्षेत्र सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक एवं धार्मिक में नारी की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। लेकिन कभी भी इसके सही रूप को सामने नहीं लाया गया। आज लोकतांत्रिक समाज में यह धारणा बनने लगी है कि नारी – पुरुष से कम नहीं है। लेकिन खुले दिल एवं दिमाग से इसको स्वीकार किया जाए तो सभ्यता और संस्ति का और भी उन्नत रूप सामने आयेगा। साहचर्य के नियम को स्वीकारना होगा तथा महत्व को भी समझना होगा। कुछ साक्ष्यों, विद्वानों एवं पुस्तकों के आधार पर इस लेख में प्राचीन भारत में नारियों की स्थिति पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

नारियों की स्थिति पुरापाषाण काल के पत्थर के औजारों से तो स्पष्ट नहीं होती है पर नवपाषाण काल के महीन एवं सुगढ़ औजारों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इनके निर्माण में महिलाओं की स्पष्ट भूमिका थी। महिलाओं की स्पष्ट पुरातात्विक साक्ष्य सिंधु घाटी की सभ्यता से मिलने लगा है। मातृदेवी की मूर्तियाँ, दूध पिलाती महिलाओं की मूर्ति जो पूजनीय रूप में प्रस्तुत है, समाज में उनके उच्च स्थान प्राप्त होने के संकेत देते है।

ऋगवैदिक काल में नारियों की सामाजिक स्थिति उच्च थी, वे हर तरह से स्वतंत्र थी। ऋगवैदिक जन–सभा विदथ में पुरुषों के समान स्त्रियों को भी अपनी बात प्रस्तुत करने की स्वतंत्रता थी। लोपा, मुद्रा, भोषा, अपाला, तथा मुदगलानी ऋगवैदिक कालीन नारियाँ पूर्णतः शिक्षित तथा समकालीन ऋषियों की तरह ऋग्वेद के मंत्रों की द्रष्टा भी थी।

उत्तर वैदिक काल आते–आते नारी की स्थिति में गिरावट आयी। जैसा कि अथर्ववेद में आख्यात है की कन्या जन्म को दुख का कारण समझा जाने लगा था। इसी प्रकार का उल्लेख हमें ऐतरेय ब्राह्मण में भी प्राप्त होता है। मैत्रायणी संहिता में एक स्थान पर नारी को पासा एवं सूरा के साथ तीन प्रमुख बुराइयों में परिभाषित किया गया है। यहीं से पुरुष प्रधान समाज की रूपरेखा तैयार दिखती है। शिक्षा उपनयन आदी गौण हो जाता है।

स्मृति युग में समाज की परिस्थितियाँ बदल गयी। स्त्रियों की स्वतंत्रता खत्म कर दी गयी तथा उन्हें पूर्णतरू पुरुषों के अधीन कर दिया गया। मनुस्मृति में कहा गया है– षपिता रक्षति कौमारे, भर्त्ता रक्षति यौवने। रक्षन्ति स्थावीरे पुत्रारू न स्त्री स्वतंत्रय मर्हति।ष अर्थात अविवाहित रहने पर पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र उसका संरक्षक है। स्त्रियाँ कभी स्वतंत्र नहीं रह सकती। मनु ने कुछ नियम बताये जिनके अनुसार स्त्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है। उनमें मंत्रों का उच्चारण करने की योग्यता भी नहीं है। मनु के अनुसार स्त्रियों को केवल घर के कार्य करने चाहिए व पति की सेवा करनी चाहिए। यही उनका परम धर्म है। उस काल में विवाह की आयु कम हो गयी थी। कन्या का विवाह 10 से 12 वर्ष में कर देने का विधान बनाया गया। कम आयु में विवाह कर देने से वे शिक्षा से वंचित रह जाती थी। उनमें अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता नहीं आ पाती थी तथा वे धन व सुरक्षा के लिए पुरुषों पर आश्रित रहती थी। उस काल में स्त्रियों को वेद की शिक्षा के स्थान पर संगीत, नृत्य, चित्रकला व अन्य ललित कलाओं को सीखने पर अधिक जोर दिया जाने लगा था। इस प्रकार स्मृति युग में स्त्री शिक्षा की स्थिति काफी दयनीय थी।

छठी शताब्दी ई. पूर्व में नारी शिक्षा देखने को मिलती है। महावीर और बुद्ध ने संघ में नारियों के प्रवेश की अनुमति दे दी थी। जैन साहित्य में जयंती का पता चलता है जो धर्म, ज्ञान और दर्शन की प्यास में अविवाहित रही और अंत में भिक्षुणी हो गई। इस समय गणिकाओं का एक वर्ग भी पैदा हो चुका था, जो नगरों में रूपजीवा का कार्य करती थी। वैशाली की नगरवधू अम्रपाली इनमें सबसे अधिक विख्यात थी।

आगे के चरण में नारियों की स्थिति में उत्तर भारत में ह्रास ही होता रहा। नारी की सामाजिक, शैक्षणिक स्थिति और भी खराब हो गई। यद्यपि दक्षिण भारत में समाज में स्त्रियों की प्रतिष्ठा थी, राजाओं के साथ उनके माताओं का नाम भी जोड़ा जाता था। संगम काल में स्त्रियों का स्थान सम्मान जनक था। उच्च वर्ग की स्त्रियाँ शिक्षा पाती थी।

गुप्त काल में स्त्रियों की अवस्था में और गिरावट आयी, विधवाओं का जीवन कष्टप्रद हो गया तथा सती प्रथा का प्रचलन होने लगा। अभिलेख में सती प्रथा चलन का प्रमाण मिलता है। नारी शिक्षा सामान्य वर्ग के लिए कठिन होती जा रही थी तथापि उच्च वर्ग की कुछ स्त्रियों के विदुषी और कलाकार होने का भी उल्लेख मिलता है । अभिज्ञानशाकुंतलम में अनसूईया को इतिहास का ज्ञाता

***इतिहास विभाग राम सुन्दर दास महिला महाविद्यालय सोनपुर,**

बताया गया है। मालती माधव में मालती को चित्रकला में निपुण बताया गया है। अमरकोष में स्त्री शिक्षिकाओं के लिए आचार्य, उपाध्यायी, उपाध्याया शब्दों का व्यवहार किया गया है। यानी उच्च वर्ग में स्त्रियों को कुछ सम्मानजनक स्थान प्राप्त था।

आगे के भारत के बारे में चीनी यात्री हेनसांग के वर्णन से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। पहले से चली आ रही कुरीतियाँ बढ़ती ही जा रही थी। 8वीं से 12वीं शताब्दी के बीच स्त्रियों की स्थिति में स्पष्ट तौर पर गिरावट आई। बाल विवाह, राजघरानों में बहु विवाह, सती और जौहर प्रथा आदी ने स्त्रियों को दयनीय बना दिया। इसके लिए पतिव्रत्य धर्म का पालन करना आवश्यक था।

ऋगवैदिक काल के बाद सातवाहन वंश एवं वाकाटक राजवंश से स्त्रियों की प्रत्यक्ष, राजनीतिक, भागीदारी का प्रमाण मिलता है। इन वंशों में पितृसत्तात्मक समाज होने के बावजूद मातृसत्तात्मक तत्व बहुत अधिक प्रबल थे। समाज में उनकी प्रतिष्ठा थी। राजाओं के साथ उनकी माताओं का नाम जोड़ा जाता था। रानियाँ भी प्रशासन पर अपना प्रभाव रखती थी। उन्होंने दान भी किए और अभिलेख भी खुदवाए। गुप्त शासकों के सिक्कों पर स्त्रियों जैसे कुमार देवी तथा लक्ष्मी इत्यादि के चित्र मिलते हैं। कश्मीर की अनेक रानियों ने युद्ध में सक्रिय भाग लिया तथा सुगंधा और विद्या ने तो अभिभावकों के रूप में कश्मीर पर शासन भी किया। पूर्व मध्यकालीन भारत में सामाजिक संरचना पूर्ववत बनी रहे जिसमें नारियों की स्थिति और भी बदतर हो गई।

उपर्युक्त विवेचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस मानव सभ्यता के सृजन में नारियों की भागीदारी पुरुषों के बराबर की रही है। समाज की सामंतवादी मानसिकता नारी का वास्तविक रूप कभी सामने आने नहीं देना चाहती है। जब पाषाणकाल में व्यवस्थित जीवन शुरुआत की तब भी एवं जब भारत भौगोलिक स्थिति प्राप्त करने की प्रक्रिया में तब भी नारियों का प्रत्यक्ष या परोक्ष भागीदारी है ही। जब–जब उदार समाज ने नारियों को मौका दिया तो महान विदुषी, महान नर्तकी, सफल संरक्षिका, धार्मिक ज्ञाता, विश्वासी एवं सफल राज्य कर्मचारी, युद्ध कौशल में निपुण सेनापति एवं सुयोग्य गृहिणी का सफलता पूर्वक उत्तरदायित्व का निर्वहन किया है। सीमित अध्ययन के आधार पर तो मुझे ऐसा लगता है कि नारी को अबला समझने वाले भूल में है। उसके पास सहनशीलता की शक्ति, शालीनता, त्याग, समतावादी एवं सामंजस्यपूर्ण मानसिकता, प्र.ति प्रदत सौंदर्य, बुद्धि की अद्‌भुत शक्ति है, जो समाज की उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर बढ़ने की अग्रणी भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ सूची :–

1. द्विजेंद्र नारायण झा एवं .ष्ण मोहन श्री माली–प्राचीन भारत का इतिहास
2. एच. एन. दुबे–भारतीय संस्.ति
3. पी.एन. चोपड़ा, बी.एन. पूरी, एम.एन.दास–भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास
4. डी.एन. झा–प्राचीन भारत एक रूपरेखा
5. प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार–प्राचीन भारत
6. प्रो. राम शरण शर्मा–प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ
7. बी.डी. महाजन, प्राचीन भारत का इतिहास
8. के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्.ति